बी०ए० पार्ट - I हिन्दी प्रतिष्ठा
प्राध्यापक - डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एम० एस० कॉलेज, जहानाबाद ।

'अज्ञेय' का जीवन वृत्त

'सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय' हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर थे। इनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वे एक क्रान्तिदर्शी कवि, उच्चकोटि के कथाकार, ओजस्वी विचारक एवं सजग पत्रकार थे। इनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तरप्रदेश के कुशीनगर में हुआ था। इनके पिता डॉ० हीरानन्द शास्त्री प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता थे। इनके पिता सरकारी सेवा में थे अत: समय-समय पर इनका स्थानान्तरण होता रहता था। फलस्वरूप इनकी शिक्षा किसी निश्चित स्थान पर नहीं कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुयी। मैट्रिक की परीक्षा इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से पास की जबकि इंटर परीक्षा मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज से पास की वहीं बी०एस०सी० की परीक्षा फोरमैन कॉलेज लाहौर से उत्तीर्ण हुए। लाहौर से ही इन्होंने अंग्रेजी विषय के एम०ए० की परीक्षा पास की। इसके बाद स्वाधीनता संग्राम में आन्दोलन के कारण गिरफ्तार होकर जेल चले जाने के कारण इनकी आगे की पढ़ाई रुक गयी। स्वाध्याय के बल पर संस्कृत, फारसी, तमिल-जैसी भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया। वे सच्चे अर्थों में महान प्रतिभाशाली थे व क्रान्तिधर्मी कवि थे। अपने अवदान से इन्होंने हिन्दी कविता में नवीन वाद - प्रयोगवाद को जन्म दिया। उन्होंने 'तारसप्तक' का संपादन कर हिन्दी काव्य जगत में एक नवोन्मेष का सूत्रपात किया। काव्य के क्षेत्र में इनका बहुत बड़ा ~~योगदान~~ योगदान है। कुशलता एवं

कविता की श्रृंखला में इनकी कविताएँ अपना अलग महत्व रखती हैं। भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, - इनके काव्य संग्रह हैं जिनमें से 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारत का सर्वश्रेष्ठ साहित्य का - ज्ञानपीठ पुरस्कार इन्हें प्राप्त हुआ।

इन्होंने चार श्रेष्ठ उपन्यास भी लिखे - शेखर: एक जीवनी, भाग-एक एवं भाग-दो, नदी के द्वीप, तथा अपने-अपने अजनबी। शेखर: एक जीवनी हिंदी साहित्य का युगान्तकारी उपन्यास है जिसने उपन्यासलेखन की धारा बदल दी।

विपथगा, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप, छोड़ा ~~हुआ~~ हुआ रास्ता, लौटती पगडंडियाँ - इत्यादि इनके कहानी संग्रह हैं। इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता और सूक्ष्म विश्लेषण की प्रधानता है जिससे कहानी की बाह्य एवं आंतरिक विशिष्टताओं का सहज उद्घाटन होता चलता है। संक्षेप में कहा जाए तो प्रेमचन्दोत्तर ~~कहानियों~~ कहानीकारों में अज्ञेय जी सर्वथा विशिष्ट कहानीकार हैं।

इन्होंने अपने जीवन में यात्राएँ बहुत कीं। देश ही नहीं विदेशों के भी पवित्र स्थलों का भ्रमण इन्होंने किया था। अपनी यात्रागत भावनाओं और स्मृतियों को इन्होंने बड़े ही कौशल से अपने दो यात्रा साहित्य - एक बूँद सहसा उछली और अरे यायावर रहेगा याद - में संजोया है जो इतने जीवंत हैं जैसे पाठक स्वयं वहीं से दृश्य देख रहा हो।

अज्ञेय जी उच्चकोटि के पत्रकार थे। इनकी संपादनकला अद्भुत थी। सर्वप्रथम तो इन्होंने ~~अपने~~ अपने विभिन्न तार सप्तकों से हिंदी साहित्य में एक क्रांति पैदा कर दी। इनके अतिरिक्त - दिनमान, प्रतीक, एवं पाक्षिक जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया।

अज्ञेय जी मूलरूप से चिन्तक एवं विचारक थे जिसे इन्होंने अपने निबंध ग्रंथों में अभिव्यक्त किया था। इस क्रम में उन्होंने अनेक निबंध ग्रंथों का प्रणयन किया। त्रिशंकु, आत्मनेपद, अद्यतन, भवन्ती, अन्तरा, शाश्वती, सर्जना - इत्यादि इनके श्रेष्ठ निबंध ग्रंथ हैं।

अज्ञेय जैसा साहित्यकार हिंदी साहित्य में कोई दूसरा न हुआ। वैसी मौलिकता, वैसी कला, वैसा चिंतन और वैसी स्पष्टता अन्यत्र नहीं दिखलाई पड़ती। उन्होंने हिंदी ही नहीं वरन सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को अपनी उपस्थिति से प्रभावित किया है। सचमुच उनका व्यक्तित्व उनके नाम के अनुरूप अज्ञेय है असीम है और उनका कृतित्व सर्वथा मौलिक और नवीन है। अज्ञेय पर कोई भी साहित्य गर्व कर सकता है।